साठोत्तरी बाल कविता में प्रकृति चित्रण एवं पर्यावरण बोध

शोध आलेख

प्रस्तोता

डॉ. विकास दवे स्मिता रावत

भारतीय बाल साहित्य भोध संस्थान, इन्दौर (एम.ए., एम.फिल.)

प्रस्तावना

बाल साहित्य में कविता विधा बच्चों के लिए सबसे सहज, सरल और ग्राह्य विधा है। कविता के माध्यम से दिया हुआ संदेश बच्चों को न केवल रुचिकर लगता है। अपितु उनके लिए प्रेरणा का काम भी करता है। बड़ों के लिए प्रकृति चित्रण करना साधारणतः बिम्बात्मक अधिक होता है वहाँ प्रकृति के सानिध्य में जाकर कवि एक उदात्त भावभूमि पर होता है। उसके लिए प्रकृति कभी सहचरी कभी सखी तो कभी ईश्वर निर्मित उपहार होता है। बच्चों के लिए प्रकृति चित्रण करते समय इस प्रकार के प्रतीक और बिम्ब कम उपयोग में लाये जाते हैं। बाल साहित्य में प्रकृति बच्चों के आनंद उत्सव का एक माध्यम तो होती है साथ ही प्रकृति का मातृ स्वरूप बच्चों को अधिक आकर्षित करता है। प्रकृति चित्रण का एक और स्वरूप बाल साहित्य में बहुप्रचलित है और वह ज्ञानार्जनात्मक, इस प्रकार की रचनाओं में विशुद्ध तथ्य परकता एवं वैज्ञानिक सिद्धान्तों पर आधारित होना इसकी सबसे बड़ी विशेषता होती है।

1960 के दशक में बाल कविता के अनेक कवियों ने प्रकृति चित्रण पर अपनी कविताएँ

प्रस्तुत कीं प्रस्तुत अध्याय में प्रकृति चित्रण को दो भागों में बाँटा गया है–

(1) शुद्ध प्रकृति चित्रण

(2) प्रेरक प्रकृति चित्रण

इन भागों में प्रकृति की सुन्दरता का चित्रण मोहक दृष्टि से किया गया हैं। इसमें सभी प्राकृतिक वस्तुओं के साथ उनकी विशेषताएँ प्रदशिर्त की गई है। साथ ही अनेक वस्तुओं से हमें कुछ सीख भी मिलती हैं। जिसका असर बालमन पर बहुत गहरा होता है। और वह उम्र के साथ प्रकृति की महिमा को समझने का प्रयास करता है। बच्चे अधिकतर प्रकृति से कुछ सीख भी लेते हैं। जिस तरह प्रकृति सभी के लिए समान भाव रखती है उसी तरह बालकों का मन भी पवित्र होता है।

शुद्ध प्रकृति चित्रण

बाल कविता का लक्ष्य बालकों को प्रेरणा एवं संदेश देना होता है इसलिए बाल कविता में प्रकृति के शुद्ध बिम्बों अथवा शुद्ध प्रकृति चित्रण तुलनात्मक रूप में मिलता है किन्तु शुद्ध प्रकृति चित्रण का अभाव नहीं हैं। इस प्रकार के शुद्ध प्रकृति चित्रण में जब वैज्ञानिक सिद्धान्तों तथ्यों का समावेश किया जाता है तब इन बाल कविताओं से रसात्मकता तो कम नहीं होती है उदाहरण के लिए डॉ. परशुराम शुक्ल द्वारा रचित रचनात्मक साहित्य के भण्डार में राष्ट्रीय, पशु–पक्षी, फूल तथा राज्य के पशु–पक्षी एवं फूलों पर अनेक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं देवपुत्र, समझ झरोखा, बाल वाटिका जैसी पत्रिकाएँ श्रृंखला रूप में ऐसी रचनाओं को लम्बे समय से प्रकाशित कर रही हैं। डॉसीताराम गुप्त द्वारा रचित कविता शुद्ध प्रकृति चित्रण का उदाहरण है–

पेड़ों के समान दुनिया में कोई न पर उपकारी,
पेड़ों की काया छाया का मानव चिर आभारी
ये मलयागिरी के चंदन हैं शीतल करे बयार
हरे भरे ये पेड़ मनोहर धरती के श्रृंगार
पावन पीपल पूज्य कहीं पर बैठे बरगद दादा
घनी छाँव कुंजो की प्रिय लगती कूलर से ज्यादा
मादक महुआ खट्टी–मीठी इमली जामुन प्यारी

पेड़ों की डाली पर हम सावन में झूला झूलें
इनकी छाया म` नाचे गाये अपने गम भूलें
मानव का अभिन्न साथी है पेड़ों का परिवार
हरे भरे ये पेड़ मनोहर धरती के श्रृंगार।

सभी जीव–जन्तु, नदी, पहाड़ प्रकृति का श्रृंगार हैं भव्य पर्वत श्रृंखलाओं को देखकर बच्चों के मन में कौतुहल जागता है। विभिन्न कल्पनाएँ करने लगता है बालमन का एक सुन्दर उदाहरण देखिए–

ऐसा लगता, आसमान से
ठोकर खा, गिर पड़ा पहाड़
प्रकृति–सम्पदा भर धरती पर
किसने नग–सा जड़ा पहाड़।

डॉ. अशोक रंजन सक्सेना द्वारा रचित वर्षागीत वर्षा के सुन्दर दृश्य को उपस्थित करता है–

छम–छम–छम करते घुँघरू, बाँधे बिजली पाँव में
झींगुर की शहनाई लेकर, बरखा आई गाँव में
टहनी टहकी चिड़िया चहकी, कली–कली को छूकर निकली
बचपन वाली हँसी खुशी भी, लौटी अब की दाँव में।

प्रकृति की रचना में मौसम के साथ ऋतुओं का अपना एक महत्वपूर्ण स्थान है। ऋतुराज बसन्त के आगमन से चारों ओर उल्लास का वातावरण हो जाता है खेत–खलिहान, और कोयल सभी प्रफुल्लित हो जाते हैं ऐसे ही वातावरण का जीवन्त चित्र देखिए–

पके खेत गेहूँ की बाली, नाच रहा बगिया का माली
नये वसन पेड़ों ने पहने, भौंरों के क्या पूछे कहने
घण्टों गाती काली कोयल, कूक रही पेड़ों पर कोयल।

इसी प्रकार एक अन्य कविता ऋतुराज जिसमें ऋतुराज के आगमन से मानो धरती का श्रृंगार हो जाता है साथ ही ऐसा लगता है जैसे पेड़–पौधे, फूल–पत्ती सभी ने नये वस्त्र धारण किये हों। सभी का जीवन आनन्दमय हो जाता है। प्रस्तुत पंक्तियाँ दृष्टव्य है–

ऋतुराज तुम्हारे आने पर, अनुपम छटा बिखर जाती है
प्रकृति निखार लाती अपने में, धरती दुल्हन–सी लगती है
कलियाँ मुस्काती पेड़ों पर, हँसने लगते हैं सब फूल
नये–नये पत्तों से सजकर, पतझड़ को वे जाते भूल।

प्रकृति चित्रण बच्चों के मन के लिए सदैव सकारात्मक प्रभाव छोड़ता है। विशेषकर बसंत ऋतु का वर्णन अत्यन्त मनोहारी होता है। ऐसे ही एक वर्णन में फूलों की आई हुई बहार को दुल्हे राजा बसंत बचपन एक समंदर, कृष्ण शलभ, पृष्ठ 305, वर्ष 2009 कोयल, चक्रधर नलिन, पृष्ठ 15, वर्ष 2000 ऋतुराज, नवीन डिमरी बादलश, पृष्ठ 146, वर्ष 2005 के विवाह की सुखद तयैारियों से जोड़कर रचनाकार ने इस प्रकृति चित्रण में मानवीकरण का एक नया आयाम जोड़ा है।

घोर शीत का आया अतं, छाया चारों आरे बसंत
सब पौधों में आये फूल, रहे डाल पर झूला झूल
बहती शीतल मंद समीर, फूलों पर भौंरो की भीर
रंगों की आ गई बहार, सुन्दर फूलों का संसार
दूल्हा बन आया यह आज, किया प्रकृति ने सब सुखसाज।

इसी प्रकार एक अन्य कविता जिसमें कवि ने बच्चों को प्रकृति से जोड़ने का प्रयास किया है। उनकी यह बाल कविता नीम का पेड़ जिसमें नीम का पेड़ हमारे जीवन में किस प्रकार कार्य करता है। प्रस्तुत पंक्तियाँ–

देता है यह शुद्ध हवा, शीतल छाया और दवा
हरी–भरी है डाल घनी, टहनी से दातौन बनी।

बालगीतकार श्री सुन्दरलाल अरूणेश ने प्रभात–काल का सुन्दर चित्र उपस्थित किया है–

नई किरण को लेकर देखो नया सबेरा आया
चिड़िया ने पेड़ों के ऊपर चूँ–चूँ चीं–चीं गाया
चहल–पहल मच गई फूल भी जगकर अब मुस्काए
नन्हें काले भौंरे उनको गीत सुनाने आये।

उपरोक्त प्रकृति चित्रण में भौर की ही तरह जाड़े का वर्णन भी कम मनोहारी नहीं है। इस शीतल वातावरण में गर्मी के लू अधंड़ से तो मुक्ति मिलती ही है साथ ही सर्दी से काँपते प्राणियों को गुनगुनी धूप का आनंद लेना बहुत भाता है। इस प्रकार की रचनाएँ मनुष्य की सहज वृत्तियों की ओर इंगित करते हुए प्रकृति से उसके साहचर्य को भी दर्शाती है।

नहीं तनिक भी कम है मौसम जाड़े का
मजेदार बेहद है मौसम जाड़े का
दूर–दूर तक नाम नहीं लू–अंधड़ का
नरम गुनगुनी धूप है मौसम जाड़े का
छुईमुई–सा दिन है मौसम जाड़े का।

प्रकृति चित्रण की रचनाओं में बच्चों के सामान्य ज्ञान में वृद्धि करने वाली अनेक रचनाओं के लेखक रामनिरंजन शर्मा ठिमाऊँ पेड़ और बच्चे कविता में पेड़ों के द्वारा वायु को शुद्ध करने वाली प्रक्रिया की ओर ध्यान आकर्षित हुए कहते हैं कि–

पेड़ प्रदूषण दूर भगाएँ, बच्चे सबके मनको भाएं
बच्चों का उन्नत भविष्य बनाएं, आओं मिलकर पेड़ लगाएँ।

जिस प्रकार इन पंक्तियों में पेड़ों के माध्यम से वायु को शुद्ध करने वाली प्रक्रिया पर ध्यान केन्द्रित किया उसी प्रकार इन पंक्तियों में प्रभातकाल के समय का सुन्दर चित्रण है–

नई किरण फूटी अम्बर में, सतरंगे बादल मुसकाए
इधर उधर बागों में देखो, कितनी कलियाँ झूम रही हैं
कभी बयार थिरकती आती, इठलाती सी घूम रही हैं
पत्तों की धुन पर फूलों की टोली झूमें रास रचाएँ
यहाँ फूल हैं वहाँ कली है, तितली सबको सहला जाती
मोती सी बूँदे शबनम की, हरी दूब को नहला जाती।

बच्चों की मनोभावना प्रकृति के क्रिया–कलाप का कितना सुन्दर वर्णन इस शिशु गीत में किया गया है। कुछ पंक्तियाँ दृष्टव्य है–

बादल बरसे झम–झम–झम, बिजली चमके चम–चम–चम
भीग रही तितली रानी, झूला झूल रहे हैं हम।

(2) प्रेरक प्रकृति चित्रण

प्रकृति मनुष्य को सदैव ही कुछ न कुछ प्रेरणा देती है। प्रकृति का प्रत्येक घटक मनुष्य के लिए कोई ना कोई सकारात्मक संदेश छोड़ता चलता है। बड़ों की बात तो दूर है बच्चों को भी ये सारे संदेश समझ में आते है। यहीं कारण है कि साठोत्भरी बाल कविताओं में प्रकृति के प्रतीकों के माध्यम से प्रेरणा के अनेक नये आयाम रचे गए। इन कविताओं में कभी धरती माता धैर्य सीखाती है, तो सूरज दादा परिश्रम करने, कभी भी आलस्य नहीं करने और नियमित जीवन

जीने का संदेश देते हैं। प्रकृति से जुड़े प्रत्येक घटक में मनुष्य को कुछ न कुछ देने की प्रेरणा छुपी रहती है। प्रकृति के ये सारे तत्व यूं तो अपने सामान्य दिनचर्या का काम करते हैं किन्तु मनुष्य को प्रकृति के ये सारे क्रियाकलाप प्रेरणा का संदेश देते से प्रतीक होते हैं। उदाहरण के लिए फूल का खिलना प्रकृति की एक सामान्य प्रक्रिया है लेकिन साहित्य में इसे मुस्कुराने अथवा प्रसन्न होने के प्रतीक के रूप में इस्तेमाल किया जाता है। साहित्य में लगातार प्रयोग होते रहने से कुछ प्राणी तो विशिष्ट गुणों के साथ पहचाने जाने लगे हैं। चालाक लोमडी, चतुर बिल्ली, शरारती चूहा, कपटी बगुला और धीर गम्भीर हंस साहित्य के कुछ ऐसे ही प्रतीक हैं। हालांकि यह आवश्यक नहीं कि इन सभी प्राणियों में ये गुण मौजूद हों। ऐसे ही कुछ प्राणी बाल कविताओं में प्रेरक तत्व बनकर उभरे हैं। मधु मक्खी जहाँ घोर परिश्रम का प्रतीक बनी है वहीं कछुए को कभी–कभी आलस्य का प्रतीक बनाकर प्रस्तुत किया है। प्रकृति के ऐसे ही प्रेरक तत्वों का उपयोग करते हुए बाल साहित्य जगत ने अनेक प्रयोग किये हैं। ऐसे ही प्रेरक तत्वों की चर्चा करना हमारे इस अध्याय में शोध ा का विषय रहेगा। आज बालको ं की दिनचर्या बदलती जा रही है देर रात तक कम्प्यूटर पर चेटिंग करना, टीवी. देखना और सुबह देर तक सोना। हमारे देश में तो सूर्योदय से पूर्व उठने की परम्परा रही है जो स्वास्थ्य की दृष्टि से भी हितकर है। अतः कवि कहता है –

प्राची में जागा प्रभात है, अपनी आँखे मलता आता
चिड़ियों की चह–चह में देखो, मिला–मिला स्वर गाता जाता
ऐसे ही यदि नित्य जगो तुम, बढ़कर प्यार करेगी माता
प्रातः होने पर मुझको तो, तेरा सोना नहीं सुहाता।

समाज में जिस प्रकार हिन्दू, मुस्लिम में विवाद की प्रक्रिया चलती आ रही है लेकिन बच्चे तो नादान होते हैं इन सबके बारे में कुछ नहीं जानते हैं उन्हें जो भी बड़ों के द्वारा सीखाया जाता है या दिखाया जाता है, वो देखते हैं वहीं सोचते हैं। इसी समस्या को दूर करने का प्रयास कवि ने अपनी रचना के माध्यम से किया है। किस प्रकार प्रकृति के जीवों के माध्यम से हमें प्रेरणा मिलती है। कुछ पंक्तियाँ प्रस्तुत–

भेद न करती धर्म जाति का, हर आँगन में जाती तितली
हिन्दू हो या मुस्लिम बच्चे, सबके मन को भाती तितली।

बालगीतों की प्रख्यात रचनाकार की रचना में एक नन्हीं सी चिड़ियाँ बच्चों को परिश्रम में लिए किस प्रकार प्रेरणा दे रही हैं, यह देखिए–

खेतों के कीड़े सब खाती, कितनी प्यारी दोस्त है चिड़ियाँ
मेहनत का यह पाठ पढ़ाती, कोमल पंखों वाली चिड़ियाँ।

परिश्रम का ऐसा अनूठा पाठ नन्हीं सी चिड़ियाँ कितनी आसानी से बच्चों को पढ़ा देती है। इसी तरह श्री रमेशचन्द्र पंत फूलों को समर्पित अपनी कविता अच्छा लगता हैश में सदैव प्रसन्न रहने का संदेश देते हुए कहते हैं–

होते नहीं उदार कभी भी जीवन भर हँसते रहते हैं
रेशम जैसी छूअन मुलायम।

इसी प्रकार वे अपनी एक ओर रचना नन्हीं चिड़ियाँ में बालकों को यह कल्पना करने के लिए प्रेरित करते हैं कि नन्हीं चिड़ियाँ भी हम मनुष्य की तरह सुख–दुख का अनुभव करती होगी। दुःखी होने पर वह भी आँसूओं के माध्यम से अपना दुःख हल्का कर लेती होगी। देखें–

किन्तु दुखी होने पर वे भी, हम–सी चुप–चुप रहती होगी
आँखों से छलका कर आँसू, बैठ डाल पर रोती होगी।

मनुष्य जीवन की सार्थकता इसी बात में है कि वह संघर्ष से पार कर अपना रास्ता स्वयं बनाए और जीवन में सदैव दूसरों का अनुकरण न करते हुए हम राह स्वयं तय कर सकें तो ही जीवन की श्रेष्ठता हैं। नदी के माध्यम से वे नन्हें पाठकों को यह सीख भी देते चलते हैं कि जहाँ समाज को हमारी आवश्यकता है वहाँ हमें सेवा के लिए तुरंत पहुँच जाना चाहिए। पंक्तियाँ देखिए–

बनाने मुझे रास्ते कुछ नये हैं, जाना उधर क्या,
जिधर सब गये हैं?, चली जा रही लोग प्यासे हैं जहाँ

विपरीत स्थितियों में भी सदैव प्रसन्न रहना और अपने आसपास के वातावरण को भी प्रफुल्लित रखने का संदेश कवि ने गुलाब के माध्यम से दिया है–

काँटों में है खिला गुलाब, आसपास पैनी नोकें हैं
छेद रही हैं उसका तन, किंतु पंखुड़ियों पर हँसता है
कोमल लाल गुलाबी मन, उपवन में भरता रहता है
वह सुगंध से यह संदेश, हँसकर और हँसाकर रहना
जीवन में हो चाहे क्लेश, तेरे इस दुखमय जीवन से
मुझे ज्ञान मिल रहा गुलाब, काँटों में है खिला गुलाब।

बालकृष्ण गर्ग की कविताओं में प्रकृति की सुन्दर छटाएँ देखने को मिलती हैं। उन्होनें प्रकृति चित्रण के माध्यम से बच्चों को हमेशा आगे बढ़ने का संदेश दिया है क्योंकि गति जीवन का पर्याय है निरन्तर गतिशील रहना, अपने लक्ष्य तक पहुँचने का एकमात्र साधन है यह बालकों को यदि बचपन से ही समझ में आ जाए तो उनका विकास कुण्ठा रहित हो सकेगा इसीलिए झरना कविता के माध्यम से कवि ने यह संदेश दिया है–

कलकल छलछल बहता झरना, हमसे क्या–क्या कहता झरना
कहता जब तक मिले ना मंजिल, बढ़ते रहना नहीं ठहरना।

वृक्ष आक्सीजन का प्राणवायु का प्राकृतिक स्त्रोत हैं। वृक्ष वर्षा में भी सहायक है हरियाली के वाहक हैं। पेड़ों के अभाव मे ं जीवन असंभव है इसीलिए कवि बच्चों को वृक्ष लगाने का संदेश दे रहा है–

पेड़ हमें हरियाली देते, पेड़ हमें खुशहाली देते
पेड़ हैं धरती के उपहार, पेड़ से है जीवन–संसार
पेड़ खुशी के हैं हरकारे, पेड़ लगाएँ द्वारे–द्वारे।

मनुष्य अपने सारे गिले शिकवे भूलकर परस्पर स्नेह और प्रेम के साथ रहे यह समाज और देश दोनों की आवश्यकता है। बगीया में खिले हुए भिन्न–भिन्न प्रकार के फूल अपनी सभी प्रकार की विविधताओ के बाद भी परस्पर हिलमिल कर रहते हैं। यही कारण है कि कवि ने अपने बाल पाठकों को यह विविध रंगी प्रेरणा उपलब्ध कराते हुए बच्चों को सहज ही एकता का पाठ पढ़ा दिया है–

गेंदा ओ गुलाब महका है खिले फूल है सरसों के
सारे फूल एक बगिया में मिल जुलकर ज्यों रहते हैं
इसी तरह सब मिलना सीखे, राम कहानी कहते हैं।

भूतल पर स्थित पर्यावरण में जितने भी जीव निवास करते हैं उन सभी में मानव सबसे बुद्धिमान है किन्तु उसका यह विकास इन्हीं जीवो, वनस्पतियो ं से हुआ हैं। क्योंकि बच्चे जैसे–जैसे बड़े होते हैं, वैसे वे हर चीज से कुछ न कुछ सबक लेते हैं। फूलों से हँसना, कोयल से गाना, मछली से तैरना इसी तरह सभी जीव हमें कुछ सीखाते हैं–

फूल हमें हँसना सिखलाते, कोयल गाना सिखलाती
रंग बिरंगे कपड़े पहनों, तितली भी यह कह जाती
मेंढ़क कहता उछलो कूदो, चिड़िया उड़ने को कहती
पानी में हम तैरें कैसे, मछली भी हमसे कहती।

इसी प्रकार अन्य कविता जिसमें कोयल के माध्यम से कवि ने यह संदेश दिया कि किस तरह कोयल बसंत के मौसम में डाली–डाली घूम–घूमकर अपनी मीठी बोली से सबका मन खुश कर देती है। रंग रूप भले ही काला होता है परन्तु हमेशा बिना किसी भेद–भाव के अपना स्नेह सब पर बरसाती है। उसी प्रकार हमें भी समाज में अपनत्व के भाव से रहना चाहिए। पंक्तियाँ उवलोकनीय है–

कूक रही है कोयल काली, फूदक रही है डाली–डाली
देख–देख वासन्ती मौसम, कितनी खुश कितनी मतवाली
रंग रूप पर ध्यान न देना, कोयल से मीठा गुण लेना
भेद भाव मत रखना मन में, वाणी में मिसरी भर लेना।

प्राणी जगत में चींटी यूं तो सबसे छोटा प्राणी है किन्तु परिश्रम के मामले में वह बड़े–बड़े प्राणियों के कान काटती है। कवि ने उसे इसी कारण चतुर सयानी और अवसर को कभी न खाने वाली निरूपित किया है। सो कर अपनी जिन्दगी व्यर्थ करने वाले के लिए तो यह चींटी आदर्श ही है। परिस्थितियों से संघर्ष करना और विपरीत परिस्थितियों से हार न मानते हुए सफलता प्राप्ति की जिद ठान लेने का प्रतीक बनकर यह चींटी ही उभरी है। अपनी हिम्मत के बल पर सफलता प्राप्त कर लेने वाली यह चींटी बाल पाठक के मन में आसानी से परिश्रम करने की वृत्ति पैदा कर देती है। आइए देखते हैं इसी भाव को लिए एक कविता–

चतुर सयानी होती चींटी, अवसर कभी न खोती चींटी
कठिन परिश्रम करती रहती, नहीं बेखबर सोती चींटी
ऊपर चढ़ती गिर–गिर जाती, लेकिन कभी न रोती चींटी
हिम्मत नहीं हारती किंचित, छू लेती है चोटी चींटी
बीज परिश्रम का सबके उर, खेल खेल में बोती चींटी
देती है अनमोल सीख यह, यद्यपि छोटी होती चींटी।

प्रकृति के सभी प्राणियों में चिरैया अर्थात् चिड़ियाँ सबसे भोला और सीधा प्राणी माना जाता है। यही कारण है कि साहित्य में बेटियों को भी चिरैया के प्रतीक से दर्शाया गया है। यह चिड़ियाँ प्रकृति का वह सुन्दर उपहार है जो न केवल मन को प्रसन्न कर देती है बल्कि मनुष्य को पंख फैलाकर सफलता का नया आकाश छूने के लिए प्रेरित भी करती है। बच्चों के मन पर प्रकृति के ऐसे प्रतीक स्थाई प्रभाव छोड़ते हैं। ऐसी ही कुछ पंक्तियाँ दृष्टव्य है–

मुक्त गगन में लिए तैरती, पंखो की पतवार चिरैया
हम सबको उल्लास और सुख, का देती उपहार चिरैया
चह–चह करती यद्यपि सहती, है प्रकृति की मार चिरैया
दुख सहती है फिर भी सब पर, खूब लुटाती प्यार चिरैया।

इसी प्रकार झबरीले बालों वाली भेड़ का यह सुन्दर स्वरूप भी देखें–

भेड़ बिचारी भोली–भाली, तन पर लम्बे बाल
इन्हें काट कर बुन देते जन, स्वेटर सुन्दर शाल
है गुणकारी दूध भेड़ का, करती यह उपकार है
शीत देश के रहने वालों को, इनका उपहार है।

नरम–नरम बालों से आच्छादित भड़े बच्चों के लिए आकर्षण का केन्द्र होती है। यह भड़े न केवल दूसरों को ऊन प्रदान करती है बल्कि ठण्डे प्रदेशों में रहने वालों के लिए तो वह प्रकृति का उपहार ही है। शीत प्रदेश के लोगों के लिए भेड़ की ऊन के साथ–साथ उसका दूध भी अत्यन्त उपयोगी होता है। इस तरह के सर्व प्रकार से उपयोगी प्राणी पर्यावरण का अभिन्न हिस्सा तो है ही मनुष्य के लिए भी यह सदैव उपयोगी होते हैं।

पर्यावरण बोध

भारतीय संस्कृति पर्यावरण संतुलन की दृष्टि से सदैव जागरूक रही है वे जानते थे कि ऋग्वेद के ऋषियों को भी वृक्षों के महत्व का ज्ञान था। प्राकृतिक ससांधनों का संतुलित उपयोग कर हम पर्यावरण को रक्षित कर सकते हैं। जीवन को सुखमय बना सकते हैं। इसीलिए हमारे दैनिक जीवन तीज, त्यौहार, धार्मिक परम्पराओं, रीति–रिवाजों आदि के संदर्भ में भी पर्यावरण बाधो गहराई से जुड़ा है। यदि हम बालक के पर्यावरण की बात करें तो बालक का पर्यावरण वह पर्यावरण है जिसमें वह जन्म लेता है, पलता है, बढ़ता है, खेलता है, ज्ञान ग्रहण करता है और अपने व्यक्तित्व को

निखारता है। अतः बच्चे के संदर्भ में हम जिस पर्यावरण की बात करते हैं उसमें मुख्य रूप से जो घटक आते हैं वे हैं— घर का पर्यावरण, परिसर का पर्यावरण, सामाजिक पर्यावरण, राजनैतिक पर्यावरण, सांस्कृतिक पर्यावरण, सचांर साधनों द्वारा निर्मित पर्यावरण आदि। जनसाधारण की भाषा में पर्यावरण का तात्पर्य चारों तरफ के परिवेश या वातावरण से है जिसमें मानव सहित समस्त जीवधारी पेड़—पौधे, जीव—जन्तु आदि रहते हैं। उसमें पलते बढ़ते पनपते अपनी—अपनी स्वाभाविक क्रियाओं का विकास करते हैं। इस प्रकार हमारे चारों ओर का विस्तृत वातावरण और उसमें पाए जाने वाले प्राकृतिक, अप्राकृतिक जड़ एवं चेतन सभी मिलकर हमारा पर्यावरण का मुख्य ढाचां है। क्योंकि समस्त जीवधारी आकाश (वायुमण्डल) से प्राण वायु लेते हुए जल, अग्नि (ऊर्जा) का उपयोग करते हुए अपना जीवन चक्र पूर्ण कर पाते हैं।

पर्यावरण प्रदूषण

मनुष्य का निर्माण पंच तत्वों से मिलकर होता है। वे पाँच तत्व हैं— पृथ्वी, आकाश, अग्नि, जल और वायु। इन पाँचों तत्वों को मनुष्य जीवन भर पग—पग पर अपने साथ अनुभव करता है। इनमें से भी विशेषकर वायु और जल मनुष्य की जीवनी शक्तियाँ हैं। मनुष्य ने आधुनिक युग की आपाधापी में और जीवन का मशीनीकरण करते हुए अपने पूरे जीवन को प्रदूषित करके रख दिया है। वैज्ञानिक खोजों के नाम पर मनुष्य ने जीतने भी आविष्कार किये वे सब थे तो मनुष्य की सुविधा के लिए किन्तु इन आविष्कारो ने मनुष्य की प्राकृतिक सपं दाओं को कहीं न कहीं प्रदूषित ही किया है। गाड़ी घोड़ों ने और कल कारखानों ने विषैले धुएँ से वातावरण को जहरीला बनाने का ही काम किया है। इन कल कारखानों ने ही स्वच्छ जल लिए नदियों को न केवल पीने योग्य नहीं छोड़ा बल्कि अनेक रोगों का घर बनाकर छोड़ दिया है। वायु और जल के अतिरिक्त ध्वनि का प्रदूषण भी आज एक विभीषिका बनकर उभरा है। पर्यावरण पर एक बड़ा खतरा बनकर मंडरा रहा है पोलीथीन। इस राक्षस ने न केवल धरती की छाती को छलनी किया है बल्कि इसके नष्ट न होने की प्रकृति ने एक नासूर का रूप ग्रहण कर लिया है।

इन सारे खतरों से आने वाली पीढ़ी को आगाह कराना बाल साहित्य का प्रथम कर्तव्य है। नयी पीढ़ी को इन खतरों के प्रति सचेत करते हुए पर्यावरण संरक्षण का पाठ पढ़ाना एक अनिवार्यता सी हो गई है। बाल साहित्य ने अपने सामाजिक दायित्व का निर्वाह बड़ी कुशलता से किया है। विशेषकर पर्यावरण प्रदूषण पर केन्द्रित बाल कविताओं की एक बड़ी मालिका सी प्राप्त होती है। इस उप अध्याय में हम ऐसी ही कुछ रचनाओं का विषद विवेचन करेगें।

प्रदूषण आज के युग की सबसे बड़ी महामारी है। यह आज वैश्विक संकट बनकर दुनिया के समक्ष एक बड़ी चुनौती बनकर उभरा है। बाल कविताओं में इस प्रदूषण के कारण और निवारण दोनों पर ही पर्याप्त बल दिया है। प्रदूषण के कारणों का उल्लेख करते हुए कवि कहता है कि फक्ट्री की चिमनियों से निकलने वाला जहरीला धुआँ विषैली गैसें, बहुत तेजी से बढ़ रहे वाहनों की संख्या के कारण बढ़ रहा वायु प्रदूषण वातावरण को जहरीला बना रहा है। कुछ पंक्तियाँ उल्लेखित हैं—

फैक्ट्री की चिमनी से फैली, गैसें तीखी और विषैली
या धुआँ मोटर—गाड़ी के, अथवा ट्रक ट्रैक्टर लारी के फैलाते हैं वायु—प्रदूषण।

इसी प्रकार एक अन्य कविताओं की पंक्तियाँ प्रस्तुत हैं—

रोज उगलती, धुआँ चिमनियाँ
बेहद मुश्किल, हुआ प्रदूषित
पर्यावरण हमारा, बेहद मुश्किल।

जल प्रदूषणों के कारणों से अवगत कराते हुए कवि कहता हैं कि पानी में मिलने वाला साबुन सोडा, राख, मिट्टी, अधजली लाशें, घरों से निकलने वाला गदां पानी तथा साथ ही कचरा एवं कारखानों से निकलने वाले विषैले तत्व जल को प्रदूषित करते हैं। जल को प्रदूषित करने वाले इन कारणों को रोकने के लिए जनसामान्य को सचेत करना होगा। प्रस्तुत पंक्तियाँ दृष्टव्य हैं—

साबुन सोडा, मिट्टी राख, जली, अधजली सड़ती लाश
महानगर के गंदे नाले, कचरे कल—कारखाने वाले
फैलाते हैं जल—प्रदूषण।

बाल कविता में प्रदूषण के भिन्न–भिन्न प्रकारों का विस्तार से उल्लेख आता है। ध्वनि प्रदूषण की चिन्ता करते हुए कवि कहता है कि तेज आवाज में बजाए जाने वाले ड्रम भोंपू या हार्न, तेज आवाज वाले सीटियाँ, सायरन, पटाखे आदि से होने वाला शोर अर्थात् कुल मिलाकर निश्चित सीमा से अधिक ध्वनि वाला शोर प्रदूषण की श्रेणी में आता है। इस प्रदूषण से बचने का तरीका यही है कि मनुष्यो ं के कानों की सहनशक्ति से अधिक ध्वनि का उपयोग मनुष्य न करें। कुछ पंक्तियाँ उल्लेखित हैं–

ड्रम, भोंपू, अंग्रेजी बाजे, सीटी सायरन की आवाजें
धूम–धड़ाका, शोर–शराबा, ध्वनि निश्चित सीमा से ज्यादा
फैलाते हैं ध्वनि प्रदूषण।

आज के भागते दौड़ते इस परिवेश का जीवंत चित्र इस बाल कविता में प्रस्तुत करते हुए कवि ने तेज ध्वनि प्रदूषण करते वाहनों और हवा में जहर घोलते उनके धुँए का विवरण प्रस्तुत किया है जिसने मनुष्य का सासं लेना भी दूभर कर दिया है। इस चील्लपों में कहीं न कहीं मनुष्य का मन दुःखीत है, उसे ही कवि ने मन के गुलाब का मुरझाना कहा है। जनसामान्य में भी पर्यावरण प्रदूषण के प्रति संवेदनहीनता की स्थिति बनी हुई है जिसके चलते वे न केवल कचरा सडक़ों पर फेंकते हैं बल्कि पानी भी सड़कों पर बहाते रहते हैं। ऐसी स्थिति में बच्चों की संवेदना बड़ी कुशलता से जागृत करते हुए कवि कहता है–

सड़कों की हालत खराब है, आज प्रदूषण बेहिसाब है
बसें चले चलती हैं लारी, गुजरा करते हैं ट्रक भारी
दिशा–दिशा में हल्ला–गुल्ला, पों पों पी पी खुल्लम खुल्ला
कान हो गए मानो बहरे, मुरझाया मन का गुलाब है
नहीं लोग है धैर्य संभालें, कचरे को सड़कों पर डालें
इस पर बहता रहता पानी, हम दोषी है, गुनहगार हैं।

प्रदूषण के पर्यावरण पर अनेक दुष्परिणाम होते हैं। इनमें से एक सर्वाधिक खतरनाक परिणाम है ग्लोबल वार्मिंग। इसके परिणामस्वरूप पूरे वातावरण के तापमान में स्वाभाविक वृद्धि होती चली जाती है। इसी परिणाम की चर्चा करते हुए बाल कविता में कवि कहता है कि हमारी धरती का तापमान बढ़ जाने से खतरे बढ़ रहे हैं। ग्लेशियर पिघल कर जल प्लावन की स्थिति बना रहे हैं।

मीठे पानी की कमी के कारण प्राणीमात्र में त्राहि–त्राहि मची है। ग्लोबल वार्मिंग के कारण ही हमारी खेतों की मिट्टी अपनी उपजाऊ क्षमता खोती जा रही है। फसलों की ही नहीं वायुमण्डल की गुणवत्ता भी घटती जा रही है। रोगों में हो रही बढ़ोत्तरी भी चिंता का विषय है तो घट रहा वर्षा जल भी इसी का परिणाम है। कवि बाल पाठकों को इस ग्लोबल वार्मिंग से बचने के लिए चिंतन करने और समाधान के उपाय सोचने की प्रेरणा देता है–

तपती जाती धरा हमारी, बढ़ते जाएं खतरे
तापमान इस तरह उच्चतम ग्लेशियर सब पिघले
मीठे पानी की चाहत में लोग विश्व के मचले
जंगल–जंगल गाज गिर पड़ी हम क्यों गूंगे–बहरे
मिट्टी बंजर हुई हमारी मृत जीवाणु हो गए
तत्व तभी उपजाऊपन के जाने कहाँ खो गए
घटी वायुमण्डल गुणवत्ता मुरझाया मन हर्षा
रोगों ने हमको आ घेरा कम–कम होती वर्षा
कुछ ऐसा सोचें कि इसका समाधान कर पाएं
ग्लोबल वार्मिंग से अपना पर्यावरण बचाएं।

आधुनिक युग की देन इस प्रदूषण से पर्यावरण संतुलन पूरी तरह डगमगा गया है। इस संतुलन को बनाए रखने के लिए हमारे प्रयासों की ओर संकेत करते हुए कवि कहता है कि हमने पोलीथिन, कचरा, धुँआ आदि से वातावरण को शीघ्र ही मुक्त नहीं किया तो आने वाले समय में सूर्य की पराबैगंनी किरणो से प्राणियों को बचाने वाला कवच ओजोन परत में छिद्र बड़ा और बड़ा होता चला जाएगा। इस विभीषिका से बचने का एकमात्र उपाय है पर्यावरण का संरक्षण। इसी भावभूमि पर रचित एक कविता देखते हैं–

पर्यावरण प्रदूषण से धरती, की हालत खस्ता है
पर्यावरण सुधार आज की, पहली आवश्यकता है
पोलीथिन के थैले पाउच, कचरा प्लास्टिक जो फैला
धुँआ सड़न, दुर्गंध शोरगुल, दम घूटता बैचेन सभी हम
रोगी हो दुःख पाते हैं, छिद्र हुआ ओजोन पर्त में, फैले इसी प्रदूषण से।

वायुमण्डल की स्वच्छता मनुष्य के जीवन को स्वस्थ रखने का एकमेव तरीका है। इस पर्यावरण को पूरी तरह स्वच्छ और स्वस्थ बनाए रखना हमारा प्रथम कर्तव्य है। इस कर्तव्य की शुरूआत वायु प्रदूषण को रोककर स्वच्छ श्वास वायु मनुष्य को उपलब्ध कराई जा सकती है। यह भी हमारा कर्तव्य है कि हम कहीं भी कूड़ा करकट न फैलाएं जिससे पर्यावरण की स्वच्छता बनी रहे।

मनुष्य को यह भी तय करना होगा कि वह बार–बार धूँआ छोड़ने वाले वाहनों को लेकर सड़क पर न निकले क्योंकि इससे वायु प्रदूषण होने की संभावना अत्यधिक रहती है। यदि हम इन वाहनों को निकालना कम कर दें तो वातावरण से धूंए के जहर को बड़ी मात्रा में कम किया जा सकता है। पर्यावरण के प्रति इसी सद्भावना को प्रकट करती यह कविता है–

पर्यावरण वायुमण्डल का पूरा स्वच्छ तभी हो
वायु अस्वच्छ वायुमण्डल की, अगर न कहीं कभी हो
पर्यावरण साफ–सुथरा हो, यही फिर समझ लेना
गले–सड़े कूडे करकट को स्वच्छकार कर देना
दूषित वातावरण कहीं पर कभी न कभी हो
धूँआ न काला–काला छोड़ो धुआँधार वाहन से
स्वच्छ वायुमण्डल के फल से, क्या अनभिज्ञ अभी हो।

(2) पर्यावरण संरक्षण

पर्यावरण बोध और पर्यावरण प्रदूषण की चर्चा के पश्चात् यह आवश्यक हो जाता है कि हम पर्यावरण के संरक्षण की भी विवेचना करते चलें। बाल साहित्य में पर्यावरण संरक्षण पर केन्द्रित बाल रचनाएँ बहुतायत में मिलती हैं। सौ वर्ष के बाल साहित्य के इतिहास में हर दौर में पर्यावरण संरक्षण बाल साहित्यकारों की रुचि का विषय रहा है। प्रत्येक दशक में इन विषयों पर केन्द्रित बाल कविताएँ बच्चो ं को मोहती रही हैं और प्रेरणा भी देती रही हैं। इस पर्यावरण संरक्षण पर आधारित कविताओं को हम इस प्रकार विभाजित कर सकते हैं–

(1) जल संरक्षण आधारित रचनाएँ
(2) वायु संरक्षण आधारित रचनाएँ
(3) वनस्पति संरक्षण आधारित रचनाएँ
(4) प्राणी जगत संरक्षण आधारित रचनाएँ
(5) पौध रोपण हेतु प्रेरक रचनाएँ
(6) कल कारखानों और वाहनों से पर्यावरण संरक्षण वाली रचनाएँ

इन सभी रचनाओं का विश्लेषण हम इस अध्याय में करेगें ये रचनाएँ बाल पाठकों को पर्यावरण संरक्षण जैसे संवेदनशील विषय पर ध्यान आकर्षित तो करती ही है देश के आने वाले नागरिकों को प्रकृति के प्रति और अधिक जवाबदार बनाती हैं।

श्री सुंदरलाल अरूणेश सुख की साँस लेने के लिए पर्यावरण को बचाने की आवश्यकता पर बल देते हैं। उसी प्रकार देश के हर नागरिक को पर्यावरण के प्रति सजग रहना चाहिए। उनका कथन हैं–

सुख की साँस अगर लेनी है, पर्यावरण बचाना होगा
पेड़ और पौधे धरती का, सारा जहर पचा लेते हैं
वे समाज के हित चिंतक बन, सबकी जान बचा लेते हैं
जिए अधिक दिन इससे पेड़ों, का परिवार बढ़ाना होगा
सुख की साँस अगर लेनी है, पर्यावरण बचाना होगा।

कृत्रिम सुविधापूर्ण जीवन बढ़ते वैज्ञानिक आविष्कार और भोगमय जीवन ने आज पर्यावरण को सर्वाधिक प्रदूषित किया है। यह हम सभी जान गए हैं किन्तु जानते हुए भी अनजान बने हैं क्योंकि हम श्रम से दूर भागने लगे हैं। यदि परिवर्तन आ सकता है तो बच्चों से ही आ सकता है, वे सहज, सरल, श्रमपूर्ण जीवन का प्रारंभ करके अपने भविष्य को सुरक्षित बना सकते हैं। इसी भाव से प्रेरित होकर कवि बच्चों से आग्रह करता है–

अगर साइकिल अपना लें अब, हल हो प्रश्न हजार
बचे विदेशी मुद्रा, होगा, पर्यावरण–सुधार
साथ साइकिल के हो सबको, हरियाली से प्यार
वृक्ष लगाएँ, मिले वनों से, शुद्ध वायु उपहार।

राकेश चक्र ने अपनी बाल कविता फिर से मिलकर स्वर्ग बनाएँ में वर्तमान युग की सबसे बड़ी समस्या पर्यावरण का समाधान प्रस्तुत करते हुए बच्चों और वृद्धों सभी से वृक्ष लगाने का आग्रह किया है। वे बच्चों को सचेत करना चाहते हैं कि वृक्ष ही पर्यावरण के रक्षक हैं, पृथ्वी का श्रृंगार हैं।

वृक्ष लगाकर ही हम धरती को रहने याग्े य बनाने में सहायता करेगें–

प्यारी–प्यारी धरती को हम, फिर से मिलकर स्वर्ग बनाएँ
वृक्ष रोपकर जीवन अपना, आओ हम सब धन्य बनाएँ
वन–उपवन और खेतों–खेतों, गमलो–क्यारी–पथो–पथो
नहर और नदी के तटों–तटो, भवनो, विद्यालयों वटों–वटों
विधवा होती इस पृथ्वी को, नए–नए श्रृंगार कराएँ
बच्चे जागे बूढ़े जागे।

जगह–जगह मत फेंको कूड़ाश शीर्षक बाल कविता के माध्यम से यह प्रेरणा दी है कि लोग कहीं भी किसी भी जगह पर कचरा फेंक कर बीमारी को निमंत्रण देते हैं। हर व्यक्ति को अपने घर के ही समान अपने आसपास नगर की स्वच्छता के प्रति सजग होना आवश्यक है तभी हम स्वस्थ और आनन्दमय जीवन जी सकेंगे। आगे वे कचरे से खाद बनाने का वैज्ञानिक संदेश भी देते हैं।

कुछ पंक्तियाँ प्रस्तुत हैं–

जगह–जगह मत फेंको कूड़ा, हो जाएगा यह दुखदाई
इधर–उधर तुम देखो–भालो, कूड़ा एक जगह पर डालो
रह पाएगी तभी सफाई, उड़कर कूड़ा पहुँचे घर में
वृद्धि हो जीवाणुओं की दर में, कूड़ा नियत स्थान पहुँचाएं
कूड़े से फिर खाद बनाएँ, जगह–जगह मत फेंको कूड़ा।

आज के युग में संसार दूषित पर्यावरण को लेकर चिंतित हैं। डॉ. राष्ट्रबंधु ने इस चिंता को बच्चों के साथ बाँटा है ताकि उनमें पर्यावरण की स्वच्छता के प्रति जागरूकता उत्पन्न हो। यह पर्यावरण बाहर का भी है और मनोभावों का भी। बच्चों को दोनों तरह से स्वच्छ नया आकाश चाहिए।

दम घुटता है शुद्ध हवा दो, नहीं और उच्छवास चाहिए
हमें नया आकाश चाहिए, नेताओं ने भेद बढ़ाए
उलटे–पुलटे नियम बनाए, सीमाओं के ओछेपन में
एक विश्व अभ्यास चाहिए, हमें नया आकाश चाहिए।

श्रीराम श्रीवास्तव कमलेश की बाल कविता पथ–प्रदर्शन में बालकों को स्वस्थ सुखी जीवन हेतु विशेष संदेश दिया गया है–

स्वस्थ सुखी जीवन जीने हित, तुम्हें बालको राह दिखाएँ
निर्मल, सुंदर, स्वच्छ हवा में, लेकर साँस निरोग रहेंगे।

कल्पनासिंह ने बालकों में नया सवेरा लाना है कविता के माध्यम से बच्चों में पर्यावरण चेतना जागृत की है–

बिना विचारे सोचे समझे, हमने की ऐसी नादानी
जहरीली कर दी हवाएँ, दूषित कर डाला सब पानी
हरी भरी धरती की चूनर, को फिर से लहराना होगा
फूलों–फलों वाले पौधों को, फिर से तुम्हें लगाना होगा।

हरे–भरे लहलहाते पेड़ बच्चों से आव्हान कर रहे हैं कि हमारे होने से ही आपको फल और फूल मिलते हैं। हमारे जीते जी भी और हमारे बाद भी परहित जीवन तुम सबको पता रहना चाहिए। वातावरण को सुखद बनाते हुए हम प्रदूषण जैसे राक्षस पर भी नियंत्रण रखते हैं। पेड़ आव्हान करते हैं कि यदि ये बच्चे भी उनकी तरह ही सत्कार्य करने वाले बन जाएं तो वे भी समाज के आभूषण बन जाएंगे–

बच्चों से कह रहे पेड़ देखो मेरे फल फूल
पर उपकार पुण्य है भारी इसे न जाना भूल
वातावरण सुहाना, हमसे होता दूर प्रदूषण
सत्कार्यों से बन जाओ तुम जनमन के आभूषण।

बच्चे अपने समक्ष उदाहरण देखकर किसी भी बात को ज्यादा अच्छी तरह समझ लेते हैं। इसीलिए कवि बच्चों के सामने चिड़िया का उदाहरण रखते हुए कहता है कि हमसे तो ये चिड़िया ही अच्छी है जो प्रदूषण फैलाए बिना अपनी आवश्यकता के लायक ही संग्रह करती है न तो उससे ज्यादा और न उससे कम क्यों न हम उस चिड़िया से शिक्षा लेकर उसी की तरह पर्यावरण को नुकसान पहुँचाए बिना अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति करते रहें।

हमसे तो चिड़िया अच्छी है
फूदक–फूदक कर दाना चुगती है
नहीं जरूरत से ज्यादा वह
जीवन में संचय करती है
नहीं प्रदूषण फैलाती है वह
नहीं किसी को दुख देती।

पर्यावरण के प्रति साहित्य के अनेक स्वरों के दर्शन करने के बाद अंत में हम कवि की इन पंक्तियो से पर्यावरण को प्रणाम करते हैं कि यदि पर्यावरण हरा भरा रहा तो ही धरती पर सुख और शांति बनी रहेगी यह पवित्र पर्यावरण संपूर्ण मानवता का संरक्षण है। आने वाले समय में हमारी सभ्यता का परिचय इसी बात से लगाया जाएगा कि हमने पर्यावरण के साथ कैसा व्यवहार किया है।

आइए हम अपने पर्यावरण संरक्षण के इस दायित्व का निर्वाह करते हुए इस प्रदूषण मुक्त पर्यावरण के संरक्षण की शपथ लें–

हरी भरी वसुधा पर बहती रहे, शांति सुरसरि की धारा
मानवता का संरक्षक है, पावन पर्यावरण हमारा
आज सभ्यता के विकास के, साथ परम कर्तव्य हमारा
मुक्त प्रदूषण अजरामर हो, पावन पर्यावरण हमारा।

निष्कर्ष

कविताओं में प्रकृति चित्रण संबंधी रचनाओं का विश्लेषण किया। इस काल में रचनाकारों ने प्रकृति चित्रण के प्रत्येक पहलू को छूने का प्रयास किया हैं। पेड़–पौधे, पशु–पक्षी और फूल तथा तितलियों जैसे वर्णत तो प्रचुर मात्रा में उपयोग में लाए ही गए हैं साथ ही ऋतु वर्णन के अन्तर्गत सभी ऋतुओं का अत्यंत मनोहारी चित्रण दिखाई पड़ता है। प्रकृति के प्रेरणास्पद पक्ष को भी हमने अपने शोध का विषय बनाया है। प्रकृति द्वारा मनुष्य को जीवन मूल्यों का पाठ निरन्तर पढ़ाया जाता है। विशेषकर बाल पाठक अपने स्वभाव के अनुसार अपने आसपास के परिवेश से सदैव ही कुछ न कुछ सीखता है। कहीं उसे वह प्रकृति परिश्रम का पाठ पढ़ाती है तो कहीं धैर्य की शिक्षा देती दिखाई देती है। प्रकृति का यह प्रेरक रूप बच्चों को अत्यधिक आकर्षित करता है। इस विषय के अन्तर्गत उन रचनाओं का विश्लेषण भी किया गया जिनमें पर्यावरण प्रदूषण के कारणों पर प्रकाश डाला गया वहीं दूसरी ओर उन समस्याओं के समाधान सुझाने वाली कविताओं को भी हमने अपने शोध का विषय बनाया है। इसके साथ ही आज के एक और ज्वलंत विषय पर्यावरण के संरक्षण को भी केन्द्र में रखकर लिखी गई रचनाएँ बड़ी मात्रा में प्राप्त होती हैं। इन विषयों के साथ ही वैज्ञानिक और तकनीकी चेतना से युक्त कविताएँ भी इस काल में पर्याप्त लिखी गईं।